IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समानांतर सनेमा के सशक्त हस्ताक्षर:श्याम बेनेगल

(Strong Signature Of Parallel Cinema: Shyam Benegal)

Veena shivhare
AssistantProfessor
(History)
Gov. model college
Shahpura,dindori(MP)

एब्सट्रेक्ट:

मानव की शुरुआत से ही भारतीय समाज में समय के सापेक्ष परिवर्तन दिखाई देते आ रहे है। यदि सिनेमा को समाज का दर्पण माना जाता है, तो उस सिनेमा के कंटेट को लेकर समय सापेक्ष चलना होगा। सिनेमा अपने समय के समाज की एक प्रमुख दस्तावेज के साथ-साथ अपने वक़्त की एक तस्वीर भी होती है। किसी भी फ़िल्म को देखकर उस समय के समाज की कल्पना की जा सकती है, कि उस दौर में हमारा समाज कैसा था। हिन्दी समानांतर सिनेमा यही दस्तावेज और तस्वीर है। और इसी दस्तावेज पर श्याम बेनेगल ने अपनी कालजयी फिल्मों के द्वारा जो हस्ताक्षरत किए है, वह अत्यंत सराहनीय है। इतिहास में जिस तरह हम समाज के वंचित वर्गों के अध्य्यन के लिए सबाल्टर्न धारा का अध्ययन करते है; उसी तरह एक फ़िल्म के निर्माण में समाज को प्रदर्शित करने के लए हर वर्ग का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। सिनेमा के इसी सबाल्टर्न धारा का अध्ययन करके श्याम बेनेगल ने समानांतर सिनेमा को एक ऐसे मुकाम पर पहुँचाया। जिसके बाद इस नए सिनेमा में आम आदमी अपने जीवन के यथार्थ को पर्दे पर चलते हुए देखकर हतप्रभ रह गया। और इसी के माध्यम से वह अपनी समस्याओं, संघर्षों से अवगत होने के साथ ही इनके समाधान भी ढूंढने के लिए प्रेरित भी हुआ।

कीवर्ड्स:

समानांतर सिनेमा, श्यामबेनेगल, यथार्थ, समय सापेक्ष, जोख़िम, गरै पेशवेर, हस्ताक्षर, निर्देशक।

भूमिका:

हिन्दी सिनेमा सदैव से ही अपने नए-नए प्रयोगो के लए जाना जाता है। इसी प्रयोग धर्मिता ने 1969 में समानांतर सिनेमा को जन्म दिया। इसके बाद से ही व्यावसायिक सनेमा के साथ-साथ समानांतर सिनेमा भी विस्तार पाता रहा है। मनोरंजन के मुकाबले यथार्थ को परोसने की प्रतिबद्धता भले ही जोख़िम भरी थी पर इस जोख़िम को उठाया, समानांतर सिनेमा के सशक्त हस्ताक्षर माने जाने वाले श्याम बेनेगल ने। श्याम बेनेगल ने समानांतर सिनेमा की समस्त विशेषताओं जैसे यथार्थ, मनाव केंद्रित, ग़ैर पेशवर, सत्य घटनाएं, वास्तविक लोकेशन आदि को समेट कर आम आदमी के जीवन के समस्त पहलुओं पर आधारित सिनेमा निर्मित करके सिनेमा जगत में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करायी है।

जीवन परिचय:

हिन्दी समानांतर सिनेमा के मुख्य कर्णधारों में से एक 14 दिसबंर 1934 को आंध्रप्रदेश के हैदराबाद के त्रिमुलगिरी में जन्मे श्याम बेनेगल **7** बार बेस्ट फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चकु है। इनके पिता फोटोग्राफर थे। बचपन से ही चलती फरती तस्वीरों को देखकर वे बड़े हुए थे। बचपन के इस माहौल ने सिनेमा के प्रति इनका रूझान और भावी सिनेमा निर्माण के लिए वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। गुरूदत्त जैसे नामी निर्देशक भी उनके रिश्तेदार थे। जिनके साथ के बाद से ही श्याम बेनेगल पर सिनेमा सवार हो चुका था। फिल्म उनके माहौल में थी। फिल्मों में आने से पहले वह विज्ञापन के पटकथा लिखने का क्रिएटिव काम करते थे। श्याम बेनेगल ने हिन्दी सिनेमा को इतना कुछ दिया है कि लम्बे समय तक उनकी फिल्मों की छाप बॉलीवुड की फिल्मों पर बनी रहेगी। अंकुर, मंथन, मंडी, निशांत, भूमिका, समर, कलयुग, त्रिकाल, जुबेदा, वेलकम टू सज्जनपुर, वेलडन अब्बा जैसी बेहतरीन फिल्मों के माध्यम से हिन्दी सिनेमा में नई इबारत लिखने वाले श्याम बेनेगल की ये फिल्में अपने आप में एक आंदोलन की शुरुआत थी। जहां समाज के हर वर्ग का चेहरा हमें झांकते हुए मिलता है।

श्याम बेनेगल की फिल्में:

हर कलाकार अपने समय का माहिर होता है। किसी भी कलाकार के लिए वक़्त के साथ नई-नई चुनौतियों आती रहती है। श्याम बेनेगल को भी उन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। बेनेगल जी ने देश के अलग-अलग हिस्सों में जाकर अलग-अलग कम्युनिटी के लोगो को लेकर फ़िल्म बनाई। इनके सिनेमा की एक खास बात होती है कि वह अपनी फिल्मों में कहानी के हिसाब से ऐसा माहौल बनाते थे, कि बहुत छोटी से छोटी चीज को भी पर्दे पर उतार देते हैं। श्याम बेनेगल की फिल्मों के गांव इसके सबसे अच्छे उदाहरण हैं। वह अपने किरदार के रिचुअल, उनका रहन-सहन, संस्कृति आदि स्क्रीन पर ले आते है। यही सब उन्हें बाकी निर्देशकों से अलग करता हैं।

अब यदि श्याम बेनेगल की फिल्मों की बात करें तो इस क्रम में सबसे पहले अंकुर आती है। अंकुर ना केवल एक फ़िल्म थी, बल्कि वह श्याम बेनेगल का देखा गया ख्वाब था जिसे पर्दे पर साकार करने के लिए उन्हें कई वर्षों तक इंतजार करना पड़ा। यह फ़िल्म हैदराबाद की जमींदारी व्यवस्था को दर्शाती है। इसमें एक स्त्री और एक किसान के जीवन के संघर्षों को तथा उनके द्वारा किये गए व्यवस्था विरोध को दर्शाया गया है। अंकुर के अंतिम दृश्य जिसमें एक छोटा बच्चा पत्थर उठाता है, और दमनकारी के घर के कांच की खिड़की पर दे मारता है। यह एक निर्णायक क्षण था, जब हिन्दी सिनेमा ने क्रांतिकारी बनने का संकल्प लिया। बाहरी तौर पर देखने में अंकुर शांत फ़िल्म है, लेकिन जमीन का वह हरा भरा हिस्सा असमानता और अन्याय पर आधारित समाज के मीलों तक फैले दुख और गुस्से को छिपा नहीं पाता है। वर्षों बाद भी कुछ नहीं बदला है। सामाजिक प्रतिकार को एक स्पष्ट ठोस सामूहिक प्रतिरोध में बदलने के बीज के रूप में अभी अंकुरित होना बाकी है।

आगे निशांत फिल्म में श्याम बेनेगल ने उन महिलाओं की कहानी को दर्शाया है, जो अपने साथ होने वाले अत्याचार को अपनी किस्मत मान चुकी थी। यह श्याम बेनेगल के सिनेमा की ही ताकत थी जो फ़िल्म देखने के बाद आदमी जब वापस लौटता

था,तो अपने आप में शर्मिंदा महसूस करता था। बेनेगल की फिल्म मंडी में उन महिलाओं के जीवन को जितना करीब से दिखाया गया है, और कोई नही दखा पाएगा। इसमें बेनेगल जी ने प्रॉस्टीट्यूट की कहानी कहते हुए उसके हर पहलू पर बात की है और बताया है कि इन औरतों का सामाजिक, आर्थिक स्तर क्या होता है; और सभ्य समाज को उनकी और उनको समाज की कितनी जरूरत है।

फिल्म भूमिका मैं उषा नामक अभिनेत्री के संघर्ष के बहाने सिनेमा उद्योग की सच्चाई को सबके सामने लाया है। तो हरी भरी फिल्म में मुस्लिम परिवेश में स्त्रियों की मानसिक और शारीरिक सेहत पर आधारित शिक्षाप्रद फिल्म बनाई है। सरदारी बेगम जैसी फिल्मों मैं एक संगीत प्रेमी महिला की कहानी है। श्याम बेनेगल ने मंथन के माध्यम से आम जनता के सामने पूंजीपतियों, राजनेताओं, नौकरशाहों और सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार और शक्ति के केंद्रीकरण के प्रभाव को प्रकट करने का प्रयास किया है। कलयुग जैसी कालजई फ़िल्म में फिल्म में मुंबई के उद्योग धंधे में होने वाली प्रतिस्पर्धा को भी बताया है। इन सभी फिल्मों के साथ कई डॉक्यूमेंट्री जैसे द मेकिंग ऑफ महात्मा, भारत एक खोज आदि भी श्याम बेनेगल जी की ही खोज है। ये सभी श्याम बेनेगल की सिनेमा जगत में सशक्त उपस्थिति दर्ज कराती हैं।

श्याम बेनेगल की फिल्मों की विशेषताएँ:

श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित फिल्म जैसे अंकुर,निशांत, मंथन, भूमिका, मंडी, त्रिकाल, कलयुग, सरदारी बेगम,हरी-भरी आदि के विभिन्न पात्रों द्वारा समाज के हासिये पर बैठे उन लोगो की सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक समस्याओं और उनके समाधानों के लिए तथा अपने अधिकारों के लिए किए गए संघर्षों से विश्व को अवगत कराया गया है। मनुष्य का स्वभाव, चरित्र और व्यवहार समय और परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है। इसी तरह का बदलाव श्याम बेनेगल की फिल्मों में विभिन्न पात्रों के द्वारा मैं देखने को मिलता है। श्याम बेनेगल ने पात्रों की यथार्थता बनाए रखने के लिए कई बार गैर पेशेवर कलाकारों को भी अपनी फिल्मों में जगह दी थी अपनी फिल्मों के माध्यम से आम आदमी की वास्तविक और यथार्थ समस्याओं को वैश्विक समस्या के रूप मैं उजागर करके उनका समाधान निकालना ही श्याम बेनेगल के सिनेमा का उद्देश्य है।

प्रासंगिकता:

80 के दशक से प्रारंभ समानांतर सिनेमा की सबसे महत्वपूर्ण बात उसका कथानक और कथा शैली का अधिक यथार्थवादी होना था। यह सिनेमा ऐसी फिल्मों का गुलदस्ता था जहां स्टारडम की बजाय फिल्म का कथानक और उसकी बनावट ही नायक था और जहां बाजार का हस्तक्षेप नगण्य था। सीमित पूंजी और अल्प संसाधनों में उद्देश्यपूर्ण सिनेमा किस तरह से साधा जाता है। श्याम बेनेगल इस कला के सिद्धहस्त फिल्मकार रहे हैं। इसी लीक पर चलते हुए उन्होंने हिंदी सिनेमा को समृद्ध बनाया।

श्याम बेनेगल के सिनेमा ने समाज के हासिये पर बैठे वर्ग को समाज में न केवल ऊँचा दर्जा दिलाया बल्कि उनके अधिकारों के लिए उन्हें जागरूक भी किया। जो आज भी समाज और सिनेमा में देखने को मिलती है। वर्तमान में भी श्याम बेनेगल बांग्लादेश के संस्थापक और पहले राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान की बायोपिक बंगबंधु के नाम से बना रहे है। जो इस बात का उदाहरण है कि इनका सिनेमा इतिहास को भी वर्तमान में प्रासंगिक बना रहा है। इस प्रकार यह कहना गलत नही होगा कि श्याम बेनेगल समानांतर सिनेमा के सशक्त हस्ताक्षर है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- **बर्णवाल प्रमोद कुमार, श्याम बेनेगल और समानान्तर सिनेमा, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली,2020**
- **दत्ता संगीता, श्याम बेनेगल, लोटस कलेक्शन, पाली बुक, 2003**

- अग्रवाल विजय, सिनेमा और समाज, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1993
- चौकसे जयप्रकाश, सिनेमा जीवन की पाठशाला, बेनटेन बुक्स, भोपाल, 2011
- ब्रह्मानंद अजय, सिनेमा की सोच, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2013
- खान शमीम, सिनेमा में नारी, ग्रंथ अकादमी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली,2014
- चंद्र मुदिता/ समर्पिता जूही,नारी अस्मिता और भारतीय हिंदी सिनेमा, भावना प्रकाशन,दिल्ली,2015
- प्रियदर्शन, नए दौर का सिनेमा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
- सिंह संचिता, भारतीय फिल्मों में महिला किरदार, नीलकंठ प्रकाशन, 2017
- कुमार अरुण, श्याम बेनेगल:भारतीय संवेदना और अधिकारों का सिनेमा,साहित्यकार,2017
- नाथ हूब, समानांतर सिनेमा, स्टोरी मिरर,इन्फोटेक प्रा.लि. 2017
- खरे विष्णु, सिनेमा समय,अनन्य प्रकाशन, दिल्ली 2018
- शर्मा पंकज, हिंदी सिनेमा की यात्रा, अनन्य प्रकाशन दिल्ली, 2018
- कांत प्रकाश,हिंदी सिनेमा: सार्थकता की तलाश, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली,2019
- गौरीनाथ, हिंदी सिनेमा में हाशिए का समाज, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली,2019